श्री
पार्श्वनाथ विधान

रचयित्री
आर्यिका विज्ञानमती

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

- **कृति** : श्री पार्श्वनाथ विधान
- **रचयित्री** : आर्यिका विज्ञानमती
- **संस्करण** : द्वितीय, मई, 2012
- **आवृत्ति** : 2200
- **प्राप्ति स्थान** : **धर्मोदय साहित्य प्रकाशन**
  जैन मंदिर के पास, बाहुबली कॉलोनी
  सागर (म. प्र.) 094249-51771
- **मुद्रक** : विकास आफसेट, भोपाल

पुरोवाक्

हमारी आत्मा के सुसुप्त प्रदेशों में स्पंदन पैदा कर देने वाली अलौकिक शक्ति का नाम ही भक्ति है। पूज्यनीय माताजी की कलम से बिजौलिया के प्रभु पार्श्वनाथ की भक्ति पूर्वक अभिव्यक्ति यह काव्य रचना अपने आप में ही एक विधान का स्वरूप धारण कर चुकी है। श्रावक के संविधान (आचरण प्रणाली) की संरचना का प्रथम सोपान ही विधान आदि रूप भक्ति से प्रारम्भ होता है। भगवान् से हम विभक्त न हो जायें, इसलिए भक्ति एक महान् सेतु का काम करती है।

अनेक लघु और बृहद् पुस्तकों, ग्रन्थों, काव्य संग्रहों को अपने चिंतन से रचने वाली पूजनीया आर्यिका माँ विज्ञानमती माताजी ने जब 23 वें तीर्थङ्कर भगवान् पार्श्वनाथ की चतुर्थ कल्याणक स्थली पर अनेक अतिशयों से युक्त प्रभु की प्रतिमा का दर्शन किया तो उनके अंतरङ्ग से भक्ति की भावों भरी धारा प्रवाहित होती गई। जिन्हें अपने शब्दकोश में से कुछ चुनिंदा शब्दों को विधिवत् माला में पिरोकर यह काव्य संग्रह तैयार हो गया। जिसमें मंत्रों को संजोकर एक परिपूर्ण लघु विधान का रूप तैयार हो गया।

यथार्थता यह है कि इस विधान की रचना माताजी को करनी नहीं पड़ी बल्कि वे जिस सहजता से अपने महाव्रतों का पालन एवं चर्या करती हैं, उसी सहजता से भगवान् की भक्ति करते हुए यह सृजन हो गया। हम सभी उनकी तरह भगवान् के गुणानुरागी बनने का उनसे पाठ सीख सकें और उनकी ही तरह अतिशय पुण्य का अर्जन कर सकें। इसी मंगल भावना के साथ......।

ब्र. विनय

आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी : परिचय

पूर्वनाम	:	लीला
पिता	:	श्री बालूलाल जी
माता	:	श्रीमती कमला जी
जन्मतिथि	:	मिति आश्विन शुक्ला पंचमी, सन् 1963
जन्मस्थान	:	भीण्डर (उदयपुर-राजस्थान)
लौकिक शिक्षा	:	हाईस्कूल
परिणय	:	भीण्डर में ही, 18 वर्ष की आयु में, सन् 1981
गृहत्याग	:	परिणय के 18 माह बाद
प्रतिमाधारण	:	अलोध में 5 प्रतिमा, कुचामन में 9 प्रतिमा के व्रत
आर्यिकादीक्षातिथि	:	2 फरवरी 1985, कूकनवाली (कुचामनसिटी-राजस्थान)
दीक्षागुरु	:	परम पूज्य आचार्यकल्प श्री विवेकसागर जी मुनिराज
रुचियाँ	:	स्वाध्याय, तप-त्याग, चिन्तन-मनन, लेखन
विशिष्टता	:	मधुर, गम्भीर पौराणिक शैली में प्रवचन
दीक्षित शिष्याएँ	:	आर्यिका श्री वृषभमती, आदित्यमती, पवित्रमती, गरिमामती, सम्भवमती, वरदमती, शरदमती, चरणमती, करणमती, शरणमती।

श्री पार्श्वनाथ मण्डल विधान

(बिजौलिया क्षेत्र का)

पूर्व पीठिका

विन्ध्यावल्ली पार्श्व के, गुण गाऊँ अविराम।
पंच कल्याणक पूज्य हो, पाया शिव का धाम॥

ज्ञानोदय

(1)

उपसर्गों को जीता जिनने, दस भव तक भी समता से।
उन पारस के चरणों के प्रति, अब तक मेरी ममता है॥
उनकी पूजा विधान करने, लिखूँ पीठिका दस भव की।
हे प्रभु! तेरे गुण गाने से, मिटे आपदा भव-भव की॥

(2)

कमठ देव ने इक दिन श्री मरुभूति भ्रात पर एक शिला।
पटकी थी सो उससे मरकर, हाथी भव में जनम मिला॥
मुनिवर श्री अरविन्द पूज्य के, उपदेशों से बोधित हो।
अणुव्रत धारण किए भाव से, धर्म भाव अनुरोधित हो॥

(3)

कमठ बना अहि उसने गज को, काट लिया सो मरण हुआ।
कमठ गया था नरक,व्रती ने, बारम सुर में जनम लिया॥
अग्निवेग नृप बनकर मुनि हो, आत्मध्यान में लीन हुए।
नारक आकर भील बना तो, मुनि के तन में तीर दिए॥

(4)

वैर भाव था इक में, इक में, सम भावों का स्रोत बहा।
तभी एक मर बना नारकी, दूजे को सुर सौध कहा॥
पहला आकर शेर बना तो, दूजे चक्री भूप बने।
साधु बना जब नृपवर तो, हा! सिंहराज ने प्राण हने॥

(5)

पापी फिर से नरक गया अरु, मुनिवर शुभ से स्वर्ग गए।
स्वर्ग सुखों को भोग पधारे, आनन्द धरणी पाल हुए॥
षट्खण्डों को छोड़ भूप ने, मुनि के व्रत को ग्रहण किया।
और सुनो उस पापी ने आ,अजगर बनकर निगल लिया॥

(6)

फिर भी ऋषि के उर में किंचित्, कोप भाव नहिं जाग सका।
भेदज्ञान से तन-चेतन के, तन का सारा राग गया॥
तभी उन्होंने समाधिपूर्वक, मरण किया सो सुर पाया।
और कमठ ने मुनि हत्या से, श्वभ्र सिन्धु में दुख पाया॥

(7)

वही देव आ सोलह सपने, देकर वामा माता को।
बनारसी के अश्वसेन नृप, पुत्र बने शिवदाता औ॥
गर्भ-जन्म तप कल्याणक को, पाकर शिव की शिक्षा दी।
इन्द्र सुरासुर से पूजित हो, बालपने में दीक्षा ली॥

(8)

और पधारे इसी क्षेत्र पर, निज आतम को ध्याते थे।
कर्म नाश की ठान धन्य हो, अपने में रम जाते थे॥
तथा मूर्ख वह कमठ जीव आ, पारस प्रभु का बन नाना।
तापस बनकर मिथ्यातम से, मरकर ज्योतिष पद पाया॥

(9)

तभी सुनो उस ज्योतिस्सुर ने, आकर पानी बरषाया।
सात दिवस तक घोर उपद्रव, करके भी हा! हरषाया॥
फिर भी प्रभुवर पलभर को भी, च्युत न हुए सो हार गया।
तथा कर्म भी नष्ट हुए सो, कमठ पार्श्व के पाँव पड़ा॥

(11)

नाग इन्द्र ने पार्श्वनाथ पर, अपने फण फैलाए थे।
पद्मावति देवी ने आकर, प्रभुवर के गुण गाए थे॥
तभी कमठ कृत उपद्रवों का, अन्त हुआ था पार हुआ।
दस भव का वह वैरपना भी, आज यहाँ निस्सार हुआ॥

(12)

समवसरण भी लगा जहाँ पर, दिव्य देशना पायी थी।
जिसको पाकर मिथ्यामति की, प्रज्ञा भी विलसायी थी॥
उसी क्षेत्र श्री विन्ध्यावलि की, पूजन करता भाव भरी।
बिना अर्चना मानव के क्या, रहा लोक में सार कहीं॥

(13)

नमस्कार कर करूँ वन्दना, बार-बार मैं नमन करूँ।
फल में स्वामी मात्र आपके,पथ पर ही नित गमन करूँ॥
आप चरण को छोड़ कभी भी, और कहीं नहिं जाऊँ मैं।
श्वास रहे इस तन में तब तक, आप शरण को पाऊँ मैं॥

विधान प्रारम्भ

स्थापना

ज्ञानोदय

ज्ञान महोत्सव जहाँ हुआ था, उसी क्षेत्र के पारस का।
स्थापन करता सन्निधि करता, आह्वानन भव तारक का॥
आओ आओ आओ स्वामी, हृदय कमल पर बिठलाऊँ।
अवसर पाया भाग्य खुला जो, पूजन करके हरषाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

ले जल के कलशा,चेतन हरषा, सुख ही बरषा पूजन से।
सब पाप धुलेंगे, सौख्य मिलेंगे,भाग्य खिलेंगे अर्चन से॥
हे पारस देवा, पाते मेवा, करते सेवा जो पद में।
वे भव से तरते शिव को वरते, सुख से भरते पल-भर में॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लेकर चन्दन काटो बन्धन हे शिव नन्दन अरज करूँ।
मैं पाप मिटाने सुख को पाने, महिमा गाने शरण गहूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार-ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अक्षत लावे पद में आवे चित्त लगावे पूज करे।
पा शाश्वतपन को निजचेतन को, अक्षयधन को सौख्य वरे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ले पुष्प सुगंधित त्रिभुवन वंदित हे सुख मण्डित चरण धरूँ।
मम काम मिटा दो, पाप हटा दो, ज्ञान बढ़ा दो नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ले मीठे नैवज, आप चरण भज, बनने को अज[1] चरण भजूँ।
हे क्षुधा विनाशक, पुण्य प्रकाशक, त्रिभुवन शासक शरण चहूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं दीप चढ़ाऊँ पाप हटाऊँ ज्ञान सुपाऊँ चरण धरूँ।
हे शिव पथ नेता, मार्ग प्रणेता, मोह विजेता शरण गहूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले धूप दशांगी हे सुखसंगी, पाप विभंगी जो पूजे।
वो कर्म जलावे, निज को पावे, भव से जावे तुम्हें भजे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लौंग सुपारी भरकर थाली हे सुखकारी पूज करे।
वे शिव में जावे लौट न आवे, निज को पावे, ताप हरे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले चन्दन पानी हे सुखखानी, अमृत वाणी पूज्य रही।
हे ज्ञान प्रभाकर, शीश झुकाकर, अर्घ बनाकर पूज करी॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

अष्टक से मैं पार्श्व को, पूजूँ आठों याम।
अंग नमाकर आठ ही, पाऊँ अष्टम धाम॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

जन्मकृत दस अतिशय के अर्घ

(ज्ञानोदय)

कर्मोदय से सप्तधातु के, तन में आता स्वेद सदा।
प्रभु के परमौदारिक तन में, आ सकता है स्वेद कहाँ॥
मिथ्यातममय शनि भागेगा, पार्श्वनाथ की चर्चा से।
पार्श्व भक्त के शनि ग्रह की तो, मिट जायेगी चर्चा रे॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं निःस्वेदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जन्म से रहित

नव द्वारों से मल बहता है, सब संसारी प्राणी के।
नहीं बचा है मल प्रभुवर के, तभी पूजते प्राणी ये॥
मंगल ग्रह भी मंगल करने, आ जावेगा आपद में।
भक्त बनेगा पार्श्वनाथ का, जो भी आपद सम्पद में॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं निर्मलत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलशाली अरु महामल्ल हो, हार क्षणों में खा जाता।
उत्तम संहननधारी प्रभु की, पूजा में जो रम जाता॥
मोह राहु भी मिट जावे तब, राहु देव की बात कहाँ।
पूजे आकर पार्श्व चरण तो, राह दिखावे आय यहाँ॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वज्रवृषभ नाराचसंहनन घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में आप सरीखा, रूप कहीं क्या मिल पावे।
जो भी देखे जब भी देखे, मात्र देखता रह जावे॥
केतु ग्रहों की बात कहें क्या, क्रोध केतु भी नश जावे।
पुण्य केतु लहराये घर जो, भक्त पार्श्व का बन जावे॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं समचतुस्रसंस्थान घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप देह में क्षीर सिन्धु के, पानी सम ही रक्त रहा।
धवल भाव है तभी हमारा, चित्त चरण आसक्त रहा॥
गुरु ग्रह भी तो भाग खड़ा हो, या आ चरणों नमन करे।
भक्ति करे जो पार्श्वनाथ की, दुख भी उसके गमन करे॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्षीर गौर रुधिरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक-एक औ अंग पार्श्व का, आकर्षक है सुन्दर है।
फिर भी काम न उपजे कारण, विरागता का मन्दर है॥

सूर्य ग्रहों सम पूजा जावे, पार्श्वनाथ की पूजन से।
क्या कर पावे ग्रह बेचारे, डर जावे गुण कूजन[1] से ॥ 6 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौरूप्य घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह सुरभि से त्रिभुवन के सब, सुरभिवान जो द्रव्य रहे।
गन्ध रहित हो पार्श्वनाथ की, शरण गहे तो श्रव्य कहे ॥
शुक्र, शुक्र कर देगा उसको, विन्ध्यावलि में आकर जो।
भज लेगा प्रभु पार्श्वनाथ को, पा जावे गुण सागर को ॥ 7 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौगन्ध्य घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्तिक कमल कलश आदिक जो, एक सहस शुभ लक्षण है।
इन लक्षण से शोभित प्रभु की, पूजा अघ की भक्षक है ॥
भूत प्रेत क्या दुख दे पाये, वे भी आकर भक्त बने।
झूम-झूम कर पार्श्वनाथ की, भक्ति करे अनुरक्त रहे ॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौलक्षण्य घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतुल अमित बल जैसा तुममें,नहीं किसी में मिल पावे।
पार्श्व चरण के पूजक को भी, वैसा ही बल मिल जावे ॥
नहीं हटेगा पीछे हार न, खायेगा तुम भक्त कभी।
आगे होगा सबसे आगे, लौकिक सुख भी मिले सभी ॥ 9 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अप्रमितवीर्य घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस मिश्रित छप्पन व्यञ्जन, सब फीके पड़ जायेंगे।
अमृतमय तव वचन सुने जो, रोग-शोक नश जायेंगे ॥
चन्द्र चाँदनी सम ही जग को, शान्ति प्रदाता बन जावे।

1. मधुर ध्वनि

पार्श्व आपके चरण भजे तो, शिव के सुख भी वह पावे ॥ 10 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं प्रियहितवादित्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आला

सौ योजन तक सात ईतियाँ, मिट जाती है सभी भीतियाँ।
अनावृष्टि नहिं बहुत वृष्टि हो, पार्श्व भक्त के सौख्य सृष्टि हो ॥ 11 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गव्यूतिशय चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभतल में हो गमन आपका, देख नाश हो शीघ्र पाप का।
पार्श्व सभी के कष्ट मिटाते, अतिशय सबको देव बताते ॥ 12 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों-वर्षों भूख न लगती, नहीं देह की आभा घटती।
भोजन बिन भी तृप्त आप है, भक्त रहे हम सभी आपके ॥ 13 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी की हिंसा नहिं होगी, कभी न होगा अब वह रोगी।
जो पारस का स्पर्श करेगा, कंचन सम वह चमक उठेगा ॥ 14 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौन सता पायेगा तुमको, सता दिया है कर्मों को जो।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, उपसर्गों से रहित सुनेता ॥ 15 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनन तेरा सबको दिखता, दर्श मात्र से संशय भगता।
इक मुख है पर चार दिखेंगे, पारस अतिशय सभी भजेंगे ॥ 16 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक-अलौकिक सारी विद्या, आय विराजी बने अवद्या।
मिटे अविद्या सुमरण कर ले, पार्श्व चरण में सिर को धर ले॥ 17॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया कैसे पड़े आपकी, नहीं बची है गंध पाप की।
पूजा कर ले तू पारस की, छाया ना ही मिथ्यातम की॥ 18॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों की टिमकार नहीं है, सभी जानते बात सही है।
पार्श्वनाथ के चरण पड़ेगा, इच्छाओं का दमन करेगा॥ 19॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं बढ़ेंगे केश कभी भी, देव मुकुट भी झुके तभी जी।
अतिशय दसवाँ घाति नाश का, कहा गया है पार्श्वनाथ का॥ 20॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लय-कहाँ गए चक्री जिन...)

दिव्य देशना सुनकर स्वामी, पशु भी सुलझे हैं।
प्रभु चरणों की पूजा कर ले, तो क्यों उलझेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 21॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों में मैत्री उपजी, तब तो पूजे हैं।
तीन लोक के प्राणीगण आ, चरणों रीझे हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।

रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 22॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वजन-मैत्री-भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जामफल आदिक सब ही साथ फलित होंगे।
आप पधारे जहाँ-वहाँ पर, पाप दलित होंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 23॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वर्तुफलादि-शोभित-तरु परिणाम देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम हो जाती धरती, रत्नों सी लागे।
समवसरण जब आता तेरा, विपदा सब भागे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 24॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग्य चलेगी पवन जहाँ पर, आप पधारेंगे।
पाप हटेंगे जिसके उर में, आप विराजेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 25॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं विहरण-मनुगत-वायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापी से हो पापी तो भी, हर्षित होवेंगे।
पूजक के सब कल्मष जल्दी, मर्दित होवेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 26॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वजन-परमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काँटे कंकर धूल आदि भी, नाहीं बचते हैं।
आप गमन से भक्त जनों के, पातक मिटते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 27॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वायुकुमारोपशमित धूलि-कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रिमझिम-रिमझिम गंधोदक को, सुर बरसाते हैं।
आप दरश से दुखियों के भी, मन हरषाते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 28॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाद रखेंगे जहाँ कमल की, रचना करते हैं।
पंकज सम ही खिले रहे जो पूजन करते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 29॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल लद जाते वृक्षों पर तब, नम्रनीत होते।
पूजा करने वाले तेरी, सौख्य बीज बोते॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 30॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फलभारनम्रशालि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरदकाल सम निर्मल नभ हो, समवसरण आवे।
आप चरण की पूजा कर ले, आपद भग जावे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।

रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 31॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शरन्मेघवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आओ-आओ कहकर मानो, दुन्दुभि बाजत है।
महा महोत्सव प्रतिदिन उसके, घट में राजत है॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 32॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एतैतैतिचतुर्निकायामर परस्पराह्वान देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी दिशाएँ स्वच्छ सुपावन, मन को भाती हैं।
आप दरश से जन-जन के दिल, खुशियाँ छाती हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 33॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शरन् मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झग-झग करता धर्म चक्र जो, आगे चलता है।
आप चरण की आराधन से, किस्मत खिलता है॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ 34॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अतिपुण्य उदय मम आयो लय में पढ़ें)

जिस वृक्ष तले जा बैठे, प्रभु निज आतम में बैठे।
वह तरु अशोक हो जाता, फल फूलों से भर जाता॥
फल फूल से भर जाय तरु जब, पार्श्व की हो निकटता।
सब शोक मिटता जीव का, सुख शान्ति की हो प्रकटता॥
हे नील मणिमय पत्र न्यारे, सघन छाया शोभती।

जो दर्शकों के चित्त को क्षण, मात्र में ही मोहती॥
जो अर्घ उत्तम थाल भरकर, आप पद को पूजता।
वो कर्म कालुष मेट करके, जन्म से नहिं जूझता॥ 35 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर विविध पुष्प बरषाते, तब सबके मन हरषाते।
हो डण्ठल सबके नीचे, सब आ जाते हैं रीझे॥
सब आय रीझे आप पद में, भूल जाते भोग को।
बस पार्श्व उनके हृदय बैठे, फिर न पावे शोक को॥
सुन बरसते ये उग रहे ज्यों, फूल जग से कह रहे।
जो भव्य आया आप शरणा, बन्ध उसके कट गए॥
मैं काम तजकर सर्व जग के, ईश पद में आ गया।
मानों दरश से नाथ मैं षट्खण्ड वैभव पा गया॥ 36 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सुरपुष्पवृष्टि प्रातिहार्य धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये चामर झुक-झुक कहते, प्रभु पार्श्व पाप को हरते।
सो चरण झुका दे माथा, बन जाय धरम का ध्याता॥
तू धर्म ध्याता बन सकेगा, नम गया यदि पाद में।
तू कीर्ति पाकर शीघ्र पहुँचे, मोक्ष पुर के पास में॥
जैसे सुनो ये चँवर चौंसठ, झुक रहे फिर उठ रहे।
वैसे सुपूजा जैन को वे, ऊर्ध्वगामी बन गए॥
जो अर्घ लेकर छम-छमा-छम नाचता है पूजता।
वो भोग इच्छा त्याग करके, मुक्ति में ही रीझता॥ 37 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चतुःषष्ठी चामर प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव भामण्डल सुखकारी, हे महिमा जग में न्यारी।
यह प्रातिहार्य जगनामी, ये पार्श्व रहे सुखदानी॥
ये पार्श्व सबको सौख्य देकर, सब दुखों को नाशते।
जो पूजता है आप पद उसके सभी अघ भागते॥
हे देह की यह श्रेष्ठ आभा, सात भव इसमें दिखे।
जब भव्य आकर अर्चना कर, आपके चरणों झुके॥
यह आप जैसे तीर्थकर ही, पा सकेंगे लोक में।
हे ईश! तेरी पूज कर मैं, बच सकूं भव भोग से॥ 38 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भामण्डल प्रातिहार्य धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञान उपजता, त्रयलोक सौख्य से भरता।
सुर ढम-ढम ढोल बजावे, हम हर्ष-हर्ष गुण गावे॥
हम हरष-हरष गुण गाय स्वामी, तनन तन-तन ताल दे।
झालर बजाकर गीत गाकर, चरण झुकाते भाल ये॥
साड़े सुबारह कोटि बाजे, एक स्वर में बज रहे।
कह रहे हैं मोक्षपथ के, पार्श्व नेता यह रहे॥
सो भव्य तू भी शीघ्र आकर, मार्ग इनसे पूछ ले।
तू चाहता यदि अचल सुख तो, पाद इनके पूज ले॥ 39 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दुन्दुभि प्रातिहार्य मण्डितश्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय धवल छत्र तव राजे, तुम तीन लोक सिरताजे।
ये करे सूचना स्वामी, प्रभु पार्श्व रहे गतमानी॥
तुम मान माया लोभ से भी, गत हुए सो शक्र भी।
आ पूजते गणनाथ मुनिवर, अर्चते शत इन्द्र भी॥
जो छत्र की है धवलता बतला सुधवलिम भाव को।

कह रही है पार्श्व पहुँचे, शुद्ध आतम पास औ॥
सो भव्य तू भी शीघ्र ही भव, छोड़ कलुषित भाव को।
तू पूज्य पद को पूज कर ही, पा सके शिवधाम को॥40॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं छत्रत्रय प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्य देशना प्यारी, जब खिरी पूर्ण सुखकारी।
तब गणधर गुरु ने झेली, पा बनी सुजनता चेली॥
बनकर सुजनता आप चेली, समवसरण में आ गई।
सुन आप वाणी भव्य जन के, चित्त को वा!भा गयी॥
सुर मनुज प्रभु गण होय गद्‌गद्, चरण में अर्पित हुए।
वे व्रत सुसंयम धार करके, शील से सज्जित हुए॥
हे दिव्यध्वनि के नाथ पारस, दरश कर मैं धन्य हूँ।
शुभ अर्घ से पद पूज करके, आज मैं कृतकृत्य हूँ॥41॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सिंहासन है ऊँचा, जो करता सबको नीचा।
रच दिया धनद ने प्यारा, यह प्रातिहार्य सुखकारा॥
सुखकार है यह स्वर्ण निर्मित,रत्न से झगझग करे।
श्री पार्श्वस्वामी चार अंगुल, अधर राजित मद हरे॥
निज पीठ धारा सिंह ने सो, नाम सिंहासन बना।
हे पार्श्व!अनुपम आपको लख, चित्त मेरा तर बना॥
ये कोष्ठ बारह चार दिशि में, सोहते मन मोहते।
जो भव्य आठों याम पूजें, भव भ्रमण को खोवते॥42॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सिंहासन प्रातिहार्य धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

कृष्ण पक्ष की दूजी तिथि वैशाख मास की आयी।
पारस प्रभु जी गर्भ पधारे, अद्भुत खुशियाँ छायी॥43॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गर्भ कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण की ग्यारस के दिन, वामानन्दन जन्मे।
अश्वसेन नृप बाँट बधाई, मन-ही-मन में हरषे॥44॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जन्म कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दिवस में जातिस्मरण से, विरत भाव मन आया।
कल्याणक को देख मुझे तो, मात्र पार्श्व पथ भाया॥45॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं तपःकल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत चौथ वह काली थी पर, दिव्य दीप जब पाया।
समवसरण में दर्श किए तो, अन्धकार विनशाया॥46॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ज्ञान कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावन शुक्ला सातम के दिन, शेष कर्म भी नाशे।
सम्मेदाचल अमर क्षेत्र से, सिद्धालय सुख चाखे॥47॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मोक्ष कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्त रहित सब द्रव्य गुणों को, पर्यायों को जानो।
अमित ज्ञान है अमित काल तक, शाश्वत अक्षत मानो॥48॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तज्ञान गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनाकार उपयोग नित्य ही, आलोकित है तुममें।
अनन्त सुदर्शन नाम इसी का, हो जावे अब हममें ॥ 49 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तदर्शन गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय की नहीं अपेक्षा, नहीं सौख्य की इच्छा।
अवलम्बन ना बाह्य वस्तु का, फिर भी सुख है अच्छा ॥ 50 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तसुख गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको जानो प्रतिपल नूतन, पर्यायें हैं सबकी।
नहीं थको नहिं शक्ति क्षीण हो, यही वीर्य है जिन जी ॥ 51 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तवीर्य गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

क्षुधा दोष का नाम भी, मिटा आपके नाथ।
क्षुधा मिटाने मैं प्रभु, चरण नमाऊँ माथ॥
नाच-नाच कर पार्श्व को, जो पूजेगा आज।
लौकिक सम्पद प्राप्त हो, मिले मोक्ष का राज ॥ 52 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्षुधादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्यास लगेगी क्यों तुम्हें, आतम रस से तृप्त।
हुए तभी तो आपकी, अर्चा करती तृप्त॥
ठुमक-ठुमक कर ताल दे, जो पूजेगा पार्श्व।
आपद पास न आ सके,जब तक होवे श्वांस ॥ 53 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पिपासादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधि-व्याधि से नित्य ही, पीड़ित रहता लोक।
औषधि खा-खा थक गए, पर न मिटा है शोक॥

जन्म-जरा के रोग से, पूर्ण बचे हैं आप।
पारस प्रभु की पूज से, मिट जावे संताप ॥ 54 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रोगदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दूति है मृत्यु की, जर-जर होती देह।
तीर्थंकर हैं आप सो, जीर्ण नहीं हो देह॥
भक्ति-भाव से जो जजे, पार्श्वनाथ के पाद।
स्वर्गिक सुख भरपूर हो, मिले मुक्ति का साथ ॥ 55 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जरादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गति में जन्म ले, मरा अनन्तों बार।
उससे बचने आपकी, पूजा ही है सार॥
पार्श्वनाथ ना जन्म ले, शिव ललना के पास।
शुक्लध्यान से कर्म का,किया आपने नाश ॥ 56 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जन्मदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मर-मर स्वामी देह को, तज फिर पायी देह।
मरण मारने को प्रभु, तजा देह से नेह॥
अतिशय आठों द्रव्य ले, जो पूजे बन दास।
पार्श्वनाथ की शरण ले, पूरी हो अरदास ॥ 57 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मरणदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय भी हो भयभीत रे, भाग गया है देव।
कैसे लौटे पार्श्व तो, रहे देव के देव॥
डर-डर कर के पाप से, पुनः कमाया पाप।
पार्श्वनाथ की अर्चना, कर देती अघ साफ ॥ 58 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भयदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक को जानते, तो विस्मय क्यों होय।
मोह कर्म नहिं शेष जो, इच्छा भी ना होय॥
पंचेन्द्रिय से हे प्रभु, नहीं जानते आप।
ज्ञान रहा प्रत्यक्ष है, पार्श्वनाथ निरमाप॥ 59॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं विस्मयदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागी को ही राग हो, आप रहे गतराग।
नहीं बचा रति दोष सो, बढ़ा हमारा राग॥
पार्श्वनाथ तव भक्ति से, रति ना बचती शेष।
परम्परा से भव्य के, भव न बचे अवशेष॥ 60॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रतिदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वस्तु को देखकर, लालच उपजे उग्र।
उनको पाने पाप में, हो जाता है अग्र॥
पार्श्वनाथ की अर्चना, मेटे भव का राग।
वैर-भाव के साथ में, मिटे राग की आग॥ 61॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रागदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस भव के उस शत्रु से, नहीं किया था वैर।
तभी कमठ आ चरण में, झुका छोड़कर वैर॥
पार्श्वनाथ के भक्त को, नहीं लगेगी ठेस।
मारे-काटे प्राण ले, तो न उपजता द्वेष॥ 62॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं द्वेष दोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरा-मेरा सब मिटा, मिटा मोह का भाव।
इसीलिए तो पार्श्व के, चरण रहा मम चाव॥

राग-रोष के साथ में, बना मोह भी दास।
मोह विनाशक देखकर, भक्त बना मैं खास॥ 63॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मोहदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों निद्रा का प्रभो! किया आपने नाश।
तभी रहूँ मैं पूजता, जब तक दिल में श्वांस॥
चार घातिया घात कर, पाया केवलज्ञान।
क्षण भर भी जो पूज ले, आ जावे निज भान॥ 64॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं निद्रादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता से ही लोक में, दुखियारा यह जीव।
चिन्ता नाशी आपने, तभी मिटी भव पीर॥
पार्श्वनाथ के पाद में, शत-शत करे प्रणाम।
यशस्कीर्ति हो लोक में, मिट जायेगा काम॥ 65॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चिन्तादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त धातु से रहित है, देह आपकी नाथ।
कैसे आवे स्वेद कण, घातिकर्म ना साथ॥
पारस प्रभु का नाम ही, औषधि है अतिश्रेष्ठ।
रोग सभी क्षण में मिटे, जो खा लेवे जेष्ठ॥ 66॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पसेवदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात संयम रहा, सो ना उपजे स्वेद।
परम सौम्यता देखकर, हो जाते निरवेद॥
पारस प्रभु सा लोक में, नहीं रहा है देव।
चिन्तन से ही दुख मिटे, क्षण भर कर ले सेव॥ 67॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं खेददोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वियोग ना हो इष्ट का, क्यों होवे फिर शोक।
प्रेम-द्वेष सब मिट गया, तभी बने गतशोक॥
पार्श्वनाथ की पूज से, मिथ्यातम नश जाय।
समकित सूरज उदित हो, दुर्गतियाँ मिट जाय॥ 68॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शोकदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटा-अच्छा जो रहा, सभी अपेक्षित होय।
मिटी अपेक्षा आपमें, काहे को मद होय॥
पारस तेरी पूज से, पाप बन्ध रुक जाय।
पूर्व पाप भी ना बचे, पुण्य भाव बढ़ जाय॥ 69॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मददोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी का अर्घ

(ज्ञानोदय)

वृषभ देव से महावीर तक, चौबीसों जिनराज रहे।
बिम्ब भरत श्री बाहुबली के, चौबीसी में राज रहे॥
ठीक बीच में पार्श्वनाथ देवाधिदेव अतिवीर कहे।
आदिनाथ भी खड्गासन है, कर्म महारिपु जीत गए॥

(दोहा)

सब बिम्बों के चरण में, नमन करूँ शत बार।
अर्घ चढ़ाऊँ हे प्रभो, खुल जावे शिव द्वार॥ 70॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर भरत-बाहुबली आदि सर्व जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ ज्ञानोदय

समवसरण का अर्घ

समवसरण है पार्श्वनाथ का, उनमें जितने बिम्ब रहे।
अर्घ चढ़ाऊँ मन में केवल, आप मात्र का बिम्ब रहे॥ 71॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्य श्री पार्श्वनाथादि जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मंदिर का अर्घ

(दोहा)

दस गणधर है पार्श्व के, नमा सभी को शीश।
नाम स्वयंभू आदि है, अर्घ चढ़ाऊँ ईश॥ 72॥

ॐ ह्रीं स्वयंभू आदि सर्व गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानोदय)

पार्श्वनाथ जिनमंदिर जी के, चारों दिशि में मंदिर है।
तीन-तीन जिनबिम्ब सभी में, सबको मेरा वन्दन है॥
जल-फल आदिक अर्घ बनाकर, इन सबको मैं भेट करूँ।
पूजा करके हे स्वामी मैं, मुक्ति वधू से भेट सकूँ॥ 73॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ चतुःदिशि स्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तम्भों के अर्घ्य

जिसे देखते ही जीवों का, मान स्तम्भित हो जाता।
मानस्तम्भ ही यहाँ विराजे,अर्घ चढ़ाऊँ शिवदाता॥ 74॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भस्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

घत्ता

हे पार्श्व जिनेश्वर, तुम परमेश्वर,आप चरण में वन्दन है।
जो शरण गहेंगे, चरण रहेंगे, मिट जावे भव क्रन्दन ये॥
हम अर्घ सजाकर, भाव लगाकर, पूजा करते अविरल हैं।
तव नाम रटेंगे, पाप मिटेंगे, मिट जावेगी खलबल ये॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः। (108 बार)

जयमाला

दोहा

चौथा कल्याणक हुआ, जहाँ पार्श्व का पूज्य।
कहूँ मालिका क्षेत्र की, बनने को मैं पूज्य॥ 1॥

ज्ञानोदय

पार्श्वनाथ ने अश्व सुवन में, दीक्षा लेकर विहरण से।
कई वनों को कई नगर को, पूत किया था चरणन से॥
चार माह के बाद सुनो वे, बिजौलिया के जंगल में।
नाम रहा था भीमावन जो, भीम भयंकर जंगल है॥ 2॥

आकर के इक बृहद् शिला पर, ध्यान लगाने बैठ गए।
अमित काल के कर्म नाशने, निज आतम में पैठ गए॥
उसी समय आकाश मार्ग से, संवर सुर जो ज्योतिष था।
विमान उसका जाता था सो, रुका पार्श्व के ऊपर आ॥ 3॥

सुर ने सोचा नीचे कोई, महापुरुष हो देखूँ जा।
नीचे आकर देखा तो अति, क्रोध बढ़ा था उसका हा॥
क्रोधित होकर महा भयंकर, ओले पत्थर बरसाएँ।
कठोर कर्कश वचनों से भी, पुनःपुनः वह भरमाएँ॥ 4॥

लेकिन प्रभु तो किंचित् भी ना, डरे नहीं हैरान हुए।
नहीं ध्यान से डिगे न उनके, कलुषित खोटे भाव हुए॥
सप्तम दिन में सुनो अचानक, नाग इन्द्र का आसन जो।
अचल रहा पर काँप उठा सो, हुआ सुचंचल मानस औ॥ 5॥

अवधिज्ञान से देखा हा! हा!!, किया सुरक्षण मेरा जी।
आया है उपसर्ग उन्हीं पर, मैं हूँ उनका चेला जी॥

दूर न कर दूँ उसको तो फिर, क्या मतलब है ताकत से।
नहीं करूँ तो रहा कृतघ्नी, बन जाऊँ दुख गागर मैं॥ 6॥

यही सोचकर उसने आकर, फैलाकर फणमण्डल को।
छाया की थी जिसे देखकर, भाग गया शठ कमठ अहो॥
जैसे ही उपसर्ग टला धरणेन्द्र, युगल के माध्यम से।
सात दिनों से लगातार जो, किया गया था भगवन पे॥ 7॥

वैसे ही चउ घाति नाश हो, तत्क्षण केवलज्ञान हुआ।
और उसी क्षण दुष्ट कमठ भी, पार्श्व चरण प्रतिपात हुआ॥
पारस के बस परस मात्र से, कमठ अयस भी कनक बना।
मिथ्यामल को धोकर वह भी, सब देवों में चमक उठा॥ 8॥

काँप उठे थे सुर इन्द्रों के, सिंहासन अरु मुकुट झुके।
जय-जय करके वैमानिक के, साथ देव सब आ पहुँचे॥
शचि स्वामी की आज्ञा से ही, कुबेर भी झट आया था।
समवसरण को रचकर उसने, जीवन सफल बनाया था॥ 9॥

अब सुन लो इतिहास कहूँ मैं, तीर्थ क्षेत्र का प्यारा जो।
शिलालेख पर खुदा हुआ है, क्षेत्र महत्ता गाता जो॥
श्रेष्ठी श्री लोलार्क एकदा, इस पथ से ही जाता था।
निशा बढ़ी सो इसी स्थान पर, रात बिताना भाया था॥ 10॥

सपना आया विभावरी में, देख पास जो कुण्ड रहा।
उसमें है श्री पार्श्वनाथ जी, निकाल उनको शीघ्र अहा॥
और सुनो यह स्थान तीर्थ है, पार्श्वनाथ से पूज्य हुआ।
चौथे कल्याणक को पाकर, प्रभु ने इसको पूज्य किया॥ 11॥

समवसरण भी लगा यहाँ पर, दिव्य देशना पायी थी।
सुर-नर किन्नर ने आकर के, महिमा इसकी गायी थी॥
ज्ञान क्षेत्र पर मन्दिर बनवा, अब जग में विख्यात करो।
श्रेष्ठी प्रतिमा बाहर लाकर, क्षेत्र प्रतिष्ठा ख्यात करो॥ 12॥

नींद खुली तो श्रेष्ठी को कुछ, नहीं हुआ विश्वास यदा।
सुर ने जाकर सेठानी को, स्वप्न दिया था खास तदा॥
सेठानी ने कहा देव तुम, कहो सेठ से जाकर के।
मंदिर निश्चित बनवायेगा, श्रेष्ठी धर्म उजागर है॥ 13॥

सेठानी की बात मानकर, देव सेठ के पास गया।
और पुनः दे सपना इस विध, बात कही थी खास अहा॥
यही रहा वह भीमावन है, जहाँ पार्श्वप्रभु आये थे।
रेवा सरिता का तट है यह, येही सुनो शिलाएँ हैं॥ 14॥

मूर्ख कमठ ने जिनको बरसा, नरक द्वार को खोला था।
प्रभु ने समता रखकर सबमें, मुक्ति द्वार को खोला था॥
आदि-आदि दे सपना सुर तो,उसी समय निज धाम गया।
और सेठ ने उठकर मंदिर, बनवाने का काम किया॥ 15॥

कुण्ड खोदकर बिम्ब निकाला, पार्श्वनाथ का श्रेष्ठी ने।
धन्य किया था अपना जीवन, बना भावना ज्येष्ठी ये॥
जिस दिन से यह बिम्ब निकाला, इसका पानी उस दिन से।
औषध बनकर रोग मिटाता,रही महत्ता अब तक ये॥ 16॥

इसी बात को बड़ी शिला पर, खुदवा टंकोत्कीर्ण किया।
वही बताता प्रभु का केवल, ज्ञान महोत्सव यहीं हुआ॥
देख शिलाएँ लगता मानों, रखी हुई है सुरकृत है।

मन भावन है सजी हुई है, सरल सहज है अद्भुत है॥ 17॥

और सुनो अंग्रेज लोग आ, शिलालेख के नीचे जी।
धन-दौलत भण्डार मिलेंगे, यही सोचकर रीझे जी॥
धन पाने को शिलालेख में, बारूद ले विस्फोट किया।
दुग्धधार तब निकल पड़ी सो, उनका भण्डाफोड़ हुआ॥ 18॥

उसके ही हैं छेद अभी भी, शिलालेख को फोड़ा जो।
दिख कर कहते पारस प्रभु ने, यहाँ कर्म को फोड़ा औ॥
मधुमक्खी के यूथों ने भी, आकर उनको काटा था।
डंक मारकर उनके तन से, तीक्ष्ण चुभाया काँटा था॥ 19॥

अद्यावधि भी कई लोग आ, भक्ति भाव से पारस की।
अर्चा-चर्चा करके प्रभु की, पूजन कर भव तारक की॥
रोग मिटाते शोक मिटाते, सौख्य शान्ति को पाते हैं।
आप चरण से आकर्षित हो, फिर-फिर दौड़े आते हैं॥ 20॥

आदि-आदि है चमत्कार जो, अनुभव में भी आते हैं।
मनमाना सब मिलता उसको, जो भी प्रभुगुण गाते हैं॥
पार्श्व आपके गुण गाने में, सुरगुरु भी तो हार गया।
फिर भी गुण गा करके मैंने, भाव भक्ति से काम किया॥ 21॥

गल्ती होवे उसमें जो कुछ, विज्ञ शोधकर पढ़ लेवे।
क्षमा भाव धर विधान करके, जीवन अपना गढ़ लेवे॥
आप गुणों को अमित काल तक, लिख-लिखकर थक जाऊँ मैं।
तो भी पूर्ण न होंगे स्वामी, उनका पार न पाऊँ मैं॥ 22॥

जयमाला यह पूर्ण करूँ मैं, चरणों शीश झुकाऊँ मैं।
आप शरण को छोड़ कभी भी, और कहीं नहिं जाऊँ मैं॥

आप चरण मम हृदय कमल पर, शिला उकेरित ज्यों होवे।
निद्रा में या सपने में भी, शरण आपका पथ होवे॥ 23॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

ज्ञानोदय

पारसनाथ जिनेश्वर की जो, नित्याराधन करते हैं।
पाप-ताप-संताप मेंटकर, भव सागर से तरते हैं॥
मुक्ति-वधू का वरण करें फिर, लौट न भव में आते हैं।
अष्ट-गुणों से शोभित होकर, निज में ही रम जाते हैं॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

प्रशस्ति

शान्ति वीर शिव ज्ञान सिन्धु के, शिष्य सुविद्यासागर हैं।
शिष्य रहे हैं दूजे उनके, विवेक सिन्धु गुणआगर हैं॥
उनकी शिष्या रही पाँचवी, नाम रहा विज्ञानमती।
रचा उसी ने भाव भक्ति से, होकर के भी अल्पमती॥
आँवा नगरी शान्तिनाथ का, अतिशय जग में न्यारा है।
दो मंदिर हैं विशाल उन्नत, नसिया मंदिर प्यारा है॥
प्रभाचन्द्र शुभचन्द्र साधु जिन, चन्द्र मुनीश्वर गुरुओं के।
स्तम्भ बनाये धर्मचन्द्र ने, पूज्य सुसाधक पुरुओं के॥
यहीं हुआ यह विधान पूरा, बिजौलिया के स्वामी का।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, सर्व लोक में नामी का॥
आषाढ़ी के कृष्ण पक्ष की, अष्टम तिथि का दिन जानो।
वार रहा है चौथा जिसमें, पूर्ण हुआ है यह मानो॥
वीर मोक्ष पच्चीस शतक सैंतीस वर्ष का संवत है।
भव के क्षय का लक्ष्य बनाकर, रचा गया यह अर्चन है॥
सागर सूरज संत धरा पर, जब तक रह उपकार करे।
विधान करके पार्श्वनाथ का,भविजन निज उपकार करे॥